ISSN: 2231-3869 Kashf

4.G.C.482/64780 Kashf

शोधात्मक उल्लिखित अर्द्धवार्षिकी

कश्फ़

अल्पचर्चित
भारतीय सूफ़ी-साधक

संपादक :
डॉ. विनोद तनेजा

वर्ष 16/पंज -7 अंक - 1 जून 2017

ISSN: 2231-3869 Kashf
U.G.C.482/64780 Kashf

शीर्षक सत्यापन पत्र PUNBIL01098/19/1/2010-TC

कश्फ़

[शोधात्मक-उल्लिखित (Referred Journal)- द्वैभाषिक (Bilingual) अर्द्धवार्षिकी]

संरक्षक :-
श्रीमती प्रकाश कौर
(दिल्ली)
श्री चरणजीत आनंद
(कोलकाता)

न्यायिक सलाहकार :-
श्री विभोर तनेजा
एडवोकेट, चंडीगढ़

व्यवस्था और संचालन
श्रीमती नीलम तनेजा
विभोर प्रकाशन,
5016 जोशीपुरा
पो. खालसा कॉलेज,
अमृतसर -143002

संपादक : **डॉ. विनोद तनेजा**

'कश्फ़' एक अव्यवसायिक शोध पत्रिका है।

सदस्यता सहयोग आजीवन 2100 रु. संरक्षकीय : 11,100 रु.

संस्थागत : 500 रु. वार्षिक

अल्पचर्चित सूफ़ी-साधक

डॉ. सरोज बाला

सूफ़ी साधना का साधक उस क्षण में जीता है जिसमें वो जी रहा है। भूत और भविष्य से बेपरवाह वर्तमान को भोगने वाला यह साधक मानता है कि जो अतीत से घिरा हो या भविष्य की चिंता करता हो, वह कभी भी सच्ची साधना के पथ पर आगे नहीं बढ़ सकता। इसी कारण वह उस छोटे क्षण वर्तमान को उस अणु के रूप में मानता है जिसका सही विस्फोटन अधिक ऊर्जावान होता है। इसी ऊर्जा के कारण उसका जीवन सदैव ताजा और नया बना रहता है। यह नयापन जिसके लिए उसे अतीत से प्रतिपल मुक्त होते हुए भविष्य में कूदने के स्थान पर अपने क्षण में नया होना बहुत भाता है। परम्परा से यें सूफ़ी साधक विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने वाले पुल का काम करते रहे हैं। एक ऐसा पुल जिसने न जाने कितनों के एक तट से दूसरे तट तक पहुंचाया। जिस तरह पुल की कई कड़ियां तो दिखाई देती है पर कुछ ऐसी भी होती है जो बोझ तो बराबर सहती है पर दिखाई नहीं देती है। ऐसे ही सूफ़ी साधना पुल में न दिखने वाली कई कड़िया हैं जो अल्पचर्चित रूप में अपना कार्य करती रही हैं उन्हीं में से कुछ परिचय प्रस्तुत है-

1. **शेख़ कदन दानिशमंद खेराबांदी :** इनके बारे में इतना ही पता कि वह शेख सादुल्ला खेरावादी के खलीफ़ा होने के अतिरिक्त लखनऊ में प्रसिद्ध सुहरावर्दिया सूफ़ी शाह मिना के शिष्य थे।

2. **शेख़ काहनदोती :** हुमायूं और शेरशाह सूरी के समकालीन वह खानदूत जलालुपर से सम्बन्ध रखते थे। इन्होंने धर्मपरायणता हेतु अपनी अन्तर्रात्मा सूफ़ियाना संगीत को समर्पित की दी।

3. **शेख़ लाल :** वह कश्मीर में कुर्बावय्या सूफ़ी, शेख़ या कूब सर्फ़ी के शिष्यों में से एक थे जिन्हें संगीत का बहुत जुनून था। एक बार एक अजनबी द्वारा गए मधुर संगीत को सुनकर हर्षदेल्लास से इतना नाचे कि अपने घर की छत से गिर गए और गिरने पर भी ध्यानमग्न अचेतन अवस्था में नाचते रहे कि उन्हें अपनी चोट का भी पता नहीं चला। एक अन्य अवसर पर, जब वे अहमदाबाद में अपने गुरु शेख़ याकूब सर्फ़ी के साथ थे। गुजरात के सूबेदार ने इनको सम्मानित करने हेतु एक सामा नाम की सभा का आयोजन किया कहाँ पर भी संगीत में परमानव भी स्थिति को प्राप्त करते हुए अपने अन्तिम अश्रुभरे शब्द कहे या हुवा या हुवा। इनकों अहमदाबाद में मृत्यु उपरान्त दफनाया गया।

4. **शेख़ लूहरा :** शेख़ लूहरा का वास्तविक नाम अब्दुर-रय्याक था और वे अबुल-फ़ेद मक्की के पुत्र थे। इस प्रसिद्ध सूफ़ी, शेख़ लूहरा का देहान्त सितम्बर 1576 को आगरा में हुआ ।

5. **शेख़ महदी :** शेख़ माहदी शेख़ याकूब छाताबली के भाई एवं ख़लीफ़ा थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन प्रभु के ध्यान एवं चिंतन-मनन में व्यतीत किया।

6. **शेख़ मोहम्मद बिन अब्बुल्ल गुजराती:** वह गुजरात प्रांत में पैदा हुए। वह शेख़ लक्ष कर मोहम्मद के ख़लीफ़ा थे। उन्होंने अपने सभी भाव परमात्मा को समर्पित किए घायूसी शत्तारी ने उनकी बहुत प्रशंसा की। शेख़ मोहम्मद बिल अब्बुल्ला गुजराती ने हज भी किया।

7. **शेख़ मोहम्मद बिन जल्लाल :**का जन्म गुजरात में हुआ। वे शेख़ मोहम्मद शत्तारी के शिष्य और शेख़ सदरु-द-दीन जाकिर के ख़लीफ़ा थे। वह आध्यात्मिक क्षेत्र में लोगों के मार्गदर्शन और मंदू में असख्य लोगों की प्रेरणा बने। आजीवन खुदा के प्रति ध्यानमग्न रहे। मंदू में 1588 को उनका देहांत हो गया।

8. **शेख़ मोहम्मद बिन सायद मलिक :** दौलतबाद में शेख़ अब्दुल-आई-लतीफ़ के मुरीद के रूप में प्रविष्ट हुए। तत्पश्चात् वह नरनाउल-वाय-मालवा में शेख़ निजाम नरनऊली को देखने गए। आजीवन आध्मात्मिक मार्ग पर चलते हुए वह मंदू पहुँचे जहाँ उन्होंने 1578-9 ई को एक मस्जिद बनाई। वहीं पर 1610-11ई.में उनका देहांत को हुआ।

9. **शेख़ कमल अलियाज शेख़ कालू :** वह अहमदाबाद के नज़दीक स्थित मनिकपुर में रहने वाले शेख़ हूसामू 'द-दीन (1449-50) के शिष्य थे। वह एक प्रसिद्ध सूफ़ी-साधक थे जिनकी मृत्यु अलाहाबाद के पश्चिम में 41 मील की दूरी पर स्थित 'कारा' में 1450 ई में हुई।

10. **शेख़ करमू लाह मुल्तानी :** वह दाऊद मुल्तानी के पुत्र थे जिनको सुहरावर्दिया सिलसिले में पूर्ण लगन एवं निष्ठा थी। वह मंदू में स्थनांतरित हो गए जहाँ उनको सूफ़ी-साधक के रूप में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई। उस समय गुजरात के मुग़ल गर्वनर राजा मान सिंह ने इस साधक को उनके घर जाकर निजी तौर पर सम्मानित किया था।

11. **शेख़ खानू ग्वालियोरी :** वह चिश्तिया सूफ़ी ख़्वाज़ा हुसैन नागौरी के प्रसिद्ध शिष्य थे। इन्होंने चंदेरी में तैनात शेख़ इस्माइल इबन शेख़ हुर्सन सरमस्त से 'खिरका' ली।

वह ख़्वाज़ा मु 'इनऊ 'द-दीन चिश्ती के प्रति पूर्णत:समर्पित थे। इनके शिष्य इस्मा 'इल और शेख़ मुनव्वर थे। शेख़ खानू ग्वालियोरी की मृत्यु 1534-5 ई में हुई।

12. **शेख़ खुदा बख़्श मंदावी** - इनके पूर्वज अरेनिया से भारत आए थे। शेख़ खुदा बख्श मंदावी को शेख़ फ़ज़लतलाह बिन शेख़ हुसैन चिरती मुल्तानी द्वारा सूफ़ीमत में दीक्षित

किया गया। वह परमात्मा के प्रति एकाग्र चित होकर एकांत में ध्यान लगाते थे। उनको सूफ़ी-मत को क्षमता, आध्यात्यिक प्राप्ति शेख़ घाऊशी शतारी की देख-रेख में हुई।

13. **शेख़ ख़वाज़ा 'अलाम'** : वे अपने पिता की ओर से ख़्वाज़ा माऊदूद चिश्ती और माता जी की ओर से शेख़ जलाल पानीपति के वंशज थे। आप शेख़ मोहम्मद घोष द्वारा शतारिया में दीक्षित हुए। आप बहिरंग एवं गोपनीय ज्ञान को सागर थे। आपकी मृत्यु बीरपुर में हुई।

14. **शेख़ जीवः** का वास्तविक नाम अब्दुल हाय था। वे मोहम्मद गौस शत्तारी के एकमात्र प्रतिष्ठित खुलाफ़ा थे। उनका अल्लाह पर असीम विश्वास था। उनके भीतर व्याप्त एकांत में ध्यान-अभ्यास, संयमिता, फ़कीरी, आज्ञापालन, स्थिरता एवं मस्तिष्क की नम्रता को उनके उस्ताद गौस शत्तारी द्वारा उजागर किया गया। सर्वप्रथम वह दिल्ली में स्थानांतरित हुए बाद में पानीपत पर उनकी अन्तिम मंजिल बिदाऊलि थी जहाँ उनका देहांत हुआ।

15. **शेख़ जुनैदः** लखनऊ के नजदीक स्थित मोहन, जो आज उत्तर प्रदेश का उन्नाव जिला है, वहाँ रहते थे। उन्होंने अपनी भक्ति एवं शारीआब से द्वितीय जुनैद कहलाए शेख़ जुनैद ने अपने खून-पसीने से अपने जीवन की जरुरते पूरी की किसी पर बोझ नहीं बने। वह जंगल से लकड़ी काटकर बेचा करते थे। इस तरह उसका फक्र कि वह अपनी अधि शेष कमाई दान में दे दिया करते थें। शेख़ जुनैद में अरबी भाषा में पैंगम्बर मोहम्मद और चिश्तिया पीरो की प्रशंसा में छन्दबद्ध संगीत का निर्माण किया। इसके साथ उन्होंने सैंकड़ों सूफियाना प्रबंधों का हिन्दी और फार्सी भाषा में भी छंदबद्ध संगीतात्मक रचनाएं प्रस्तुत की।

16. **शेख़ जुनैद मुफ्ती** : वह शेख़ बाहु-उद्-दीन कुरैशी आसदी हाशमी के पुंत्र थे। उनका सूफ़ी ज्ञान, मन से ईश्वर-भक्ति और उत्कृष्ट शिष्टाचार से घनिष्ठ सम्बन्ध था। वे मेहमान निवाजी में बहुत विश्वास रखते थे। उनकी उपेक्षा कर कभी भी स्वयं खाना नहीं खाते थे। वे जरूरतमंद लोगों की आवश्यकताओं को पूरी निष्ठा से पूर्ण करते थे। उनका 998/29 अप्रैल 1589 को देहांत हुआ।

17. **शेख़ कबीरः** शेख़ फ़रीद-बिन अब्दुल-अजीज बिन शेख़ हमीदु-द-दीन नागौरी के वंशज थे, जिनका जन्म 1396-7 ई में हुआ। वे बहिरंग एंव गूढ़ ज्ञान के संग्रह थे। उन्होंने किताब-आईदहन को शीर्षक के अन्तर्गत जा-हू मिसबह पर टिप्पणी लिखी। उनका देहांत 1458-9 ई गुजरात में हुआ।

18. **शेख़ मोहम्मद हाय बारहनासरः** का जन्म, परमात्मा के लिए तीव्र तड़प के जादू के अन्तर्गत अहमदबाद में हुआ। वह खुद शेख़ हबीब शत्तारी के आदेश से शत्तारिया सुफ़ियों के साथ जुड़े। इसके अतिरिक्त वह शेख़ मोहम्मद गोष शत्तारी के आदरजीद खलीफ़ओं में से एक थे।

19. **शेख़ मोहम्मद हसनः** वह शेख़ हसन ताहीर के बड़े पुंत्र थे। वह अपने पिता के

आदेशानुसार चिश्ति से जुड़े, वह मक्का में हज करने हेतु यमन में एक 'म्युदिरियां बने। शेख़ अब्दुल-हक के अनुसार- 'जब वह एकाग्रचित्त होकर परमात्मा की ओर ध्यान लगाते थे तब उन पर उस आध्यात्यिक शक्ति का प्रभाव इतना अधिक पड़ता था वह ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते थे। 'अल्लाह महान है'' (तकबीर, जैसे वह स्वयं उसे बाहर आते देखते हों। उन्होंनें कहा कि वह वाहदत-अल-वूजूद के प्रबल समर्थक थे। उनकी मृत्यु 1537 ई में हुई और उन्हें दिल्ली में उनके पिता जी के मकबरे के पास दफनाया गया। वह अपने देहांत से कुछ समय पूर्व आगरा से दिल्ली आ गए थे।

20. **शेख़ मुहम्मद हुसैनी जीलानी उच्ची मखदूमः** खुरासान से मुल्तान में आकर बसने वाले शेख़ मुहम्मद हुसैनी बाद में उच्च शहर में बसे। आप घुमक्कड़ी रहे। आपका सम्बन्ध सैय्यद अब्दुल कादिर जीलानी से रहा है । आपके प्रयत्नों से ही उच्च में कादरिया सिलसिले की पहली खानकाह स्थापित हुई। 15 वी सदी के उतरार्द्ध में आप उच्च क्षेत्र के प्रसिद्ध सूफ़ी साधकों में स्थान रखते थे।

संदर्भ

1. मलफ़ज़ारे शाह मीना (यू), पृष्ठ 248
2. गुलज़ारे अबरार (जैड), पृष्ठ 245-6
3. हसन, तजकीरा (यू), पृष्ठ 226-7
4. गुलज़ारे अबरार (जैड), पृष्ठ 295
5. हसन, तजकीरा (यू) पृष्ठ 310
6. अकब रू-ए- अरवयार (यू), पृष्ठ 318
11. मा 'अरिजू-ए-विलायत (आर), एफ़ एफ. 426 बी-431 ए.
12. गुलजारें अबरार (जैड), पृष्ठ 358
13. अकबरू-ए-अखयार (यू) पृष्ठ 323.
14. गलुजारे अबरार (जैड), पृष्ठ 444
15. अकबरु-ए-अखयार (यू), पृष्ठ 402-13

रिसर्च असोसिष्ट

स्वामी दयानन्द अध्ययन केन्द्र,

बी.बी.के.डी.ए.वी. महिला महाविद्यालय,

अमृतसर।

मोबाइल : 89688-77005